डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

Date 08/06/2021 Page No.:

विषय– संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
प्रथम वर्ष, प्रथम पत्र
किरातार्जुनीयम्– प्रथम सर्ग
पद्यांश व्याख्या –

इतीरयित्वा गिरमात्तसत्क्रिये
गतेऽथ पत्यौ वनसन्निवासिनाम् ।
प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा
तदान्वचक्षेऽनुजसन्निधौ वचः ॥28॥

अन्वय:–

अथ वनसन्निवासिनां पत्यौ इति गिरम् ईरयित्वा, आत्तसत्क्रिये गते (सति), महीभुजा कृष्णासदनं प्रविश्य अनुजसन्निधौ तत् वचः आचचक्षे ।

भावार्थ–

वनेचर के इस प्रकार कहकर चले जाने पर युधिष्ठिर ने द्रौपदी के महल में जाकर भाइयों के समीप यह वृत्तान्त कहा ।

भाषार्थ–

(अथ वनसन्निवासिनां पत्यौ) तब वनेचरों के स्वामी उस किरात के (इति गिरम् ईरयित्वा) इस प्रकार के वचन कहकर (आत्तसत्क्रिये गते) सत्कार पाकर चले जाने के बाद (महीभुजा) राजा ने (कृष्णासदनं प्रविश्य) द्रौपदी के भवन में प्रवेश करके (अनुजसन्निधौ) भाइयों के समीप (तत् वचः आचचक्षे) वह वृत्तान्त कहा । अथवा भवन में प्रवेश करके भाइयों के समीप द्रौपदी से वह वृत्तान्त कहा ।

"Strength does not come from physical capacity. It comes from an indomitable will." –Mahatma Gandhi

IND CamScanner App

Date __/__/____ Page No.: _____

पदव्याख्या -

इति गिरम् ईरयित्वा = इस प्रकार का वचन कहकर। ईर + णिच् + क्त्वा। आत्तसत्क्रिये = सत्कार पानेवाले, आत्ता सत्क्रिया येन सः आत्तसत्क्रियः (बहुव्रीहि), तस्मिन्। आ + दा + क्त + टाप् = आत्ता 'आदरानादरयोः सदसती' इति गतिसंज्ञा। सत् + कृ + क्यप्रत्यय (भावे) सत्क्रिया। 'आत्तं गृहीतं स्वाधीनीकृतमात्मवशीकृतम्' इति कोषः। वनसन्निवासिनां पत्यौ गते = वनवासियों के स्वामी किरातराज (उस वनेचर) के चले जाने पर। वने सन्निवसन्तीति वनसन्निवासिनः, तेषां वनसन्निवासिनाम्, वन + सत् + नि + वस् + णिनि (कर्तरि), पत्यौ = स्वामी के, 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' से सप्तमी। गते = गम् + क्त, सप्तमी एकवचन। अथ = उसके बाद। कृष्णासदनं प्रविश्य = द्रौपदी के महल में प्रवेश करके। कृष्णायाः सदनम्। महीभुजा = राजा युधिष्ठिर के द्वारा। महीं भुनक्तीति महीभुक्, तेन। आचचक्षे = कहा गया, आङ् + ख्या (चक्षिङ्) + लिट् प्र० पु० एकवचन। अनुजसन्निधौ = भाइयों के समीप। अनुजानां सन्निधिः अनुज-सन्निधिः, तस्मिन्। अनु पश्चात् जातः। अनु + जन + ड। सन्निधिः = सम् + नि + धा + कि:।

टिप्पणी -

(1) कृष्णासदनम् को अलग करके कृष्णा को आचचक्षे का कर्म भी माना जा सकता है। (2) अनुजसन्निधौ = अनुजानां सन्निधौ विग्रह करने पर भी सभी भाइयों के समीप का अर्थ होगा, न कि केवल भीम के समीप। इति।

"You have to take the calculated risk, to earn something." – Dhirubhai Ambani

IND CamScanner App